



VISION IAS

www.visionias.in

P170

नीतिशास्त्र सामान्य अध्ययन



णमो आयरियाणं

Plus Pramesh eLib

www.pluspramesh.in



VISIONIAS

www.visionias.in

Classroom Study Material

नीतिशास्त्र

भावनात्मक (भावात्मक) समझ / बुद्धिमत्ता / प्रज्ञा: अवधारणाएं तथा
प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

विषय सूची

1. भावनाएं: मानव-मस्तिष्क का अनिवार्य संघटक	3
1.1. भावनाओं की संरचना (Structure of Emotions)	3
1.2. भावनाओं के प्रकार (Types of Emotions)	3
2. समझ/प्रज्ञा/बुद्धिमत्ता: अवधारणाएं, उपयोग और प्रकार	4
2.1. समझ/प्रज्ञा/बुद्धिमत्ता की अवधारणा	4
2.2. बुद्धिमत्ता का उपयोग (Utility of Intelligence)	4
2.3. बुद्धिमत्ता के प्रकार (Types of Intelligence)	4
3. बुद्धिमत्ता का सामाजिक पहलू	7
3.1. परिभाषा (Definition)	7
3.2. सामाजिक बुद्धिमत्ता का विकास	7
3.3. सामाजिक बुद्धिमत्ता से भावनात्मक बुद्धिमत्ता की ओर	8
4. भावनाओं और बुद्धिमत्ता के मध्य संबंध: पारंपरिक परिप्रेक्ष्य	9
5. भावनात्मक (संवेगात्मक) बुद्धि/समझ/बुद्धिमत्ता: भावनाओं और बुद्धिमत्ता का समेकन	9
5.1. मेयर और सालोवी द्वारा प्रस्तावित भावनात्मक बुद्धिमत्ता	10
5.2. डेनियल गोलमैन द्वारा प्रदत्त भावनात्मक बुद्धिमत्ता (या संवेगात्मक बुद्धि) का मॉडल	11
6. बुद्धि लब्धि (इंटेलिजेंस कोशेंट) बनाम भावनात्मक लब्धि (इमोशनल कोशेंट) पर एक दृष्टि	12
7. भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व	14
8. भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होने के लिए आवश्यक कौशल	15
9. भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले लोगों की विशेषताएं	15
10. क्या भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित की जा सकती है?	17
11. भावनात्मक रूप से मेधावी नेतृत्व का विकास	18
12. शासन और प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका	18
13. भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अंधकारमय पहलू	20
14. निष्कर्ष (To Conclude)	21
15. भावनात्मक बुद्धिमत्ता संबंधी एक केस स्टडी	21
16. विगत वर्षों में संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा पूछे गए प्रश्न	22
17. विगत वर्षों में Vision IAS GS में टेस्ट सीरीज में पूछे गए प्रश्न	22
18. विगत वर्षों में संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा पूछे गए प्रश्न: केस स्टडीज	26
19. विगत वर्षों में Vision IAS GS में टेस्ट सीरीज में पूछे गए प्रश्न: केस स्टडीज	27



1. भावनाएं: मानव-मस्तिष्क का अनिवार्य संघटक

(Emotions: The Essential Constituent of Human Psyche)

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी भावना को 'व्यक्ति की परिस्थितियों, मनोदशा, या दूसरों के साथ संबंधों से व्युत्पन्न एक प्रबल अनुभूति (अहसास)' तथा 'तर्क या ज्ञान से भिन्न स्वतः प्रवृत्त या सहज ज्ञान से व्युत्पन्न अनुभूति' के रूप में परिभाषित करता है।

भावनाएं जटिल प्रतिक्रियाएँ होती हैं जो प्रसन्नता, क्रोध, दुःख आदि जैसी गहन व्यक्तिनिष्ठ अनुभूति और साथ ही भावनात्मक अभिव्यक्तियों एवं भावनात्मक जानकारी को समझने की क्षमता/क्षमताओं अर्थात् दूसरों की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को "समझने" की क्षमता को समाविष्ट करती हैं। दूसरे शब्दों में, भावनाओं को प्रायः किसी व्यक्ति या किसी चीज के प्रति निर्देशित अनुकूल या प्रतिकूल गहन अनुभूति के रूप में समझा जाता है।

कुछ सिद्धांतकारों द्वारा भावनाओं की व्याख्या आंतरिक या बाह्य घटनाओं के प्रति पृथक और सुसंगत प्रतिक्रियाओं के रूप में की गई है जिनका जीव के लिए विशेष महत्व होता है। वे जैविक रूप से प्रदत्त और क्रमिक विकास का परिणाम होती हैं, क्योंकि उन्होंने प्राचीन और सामयिक समस्याओं के प्रति संतोषप्रद समाधान प्रदान किए हैं जिनका सामना हमारे पूर्वजों ने किया है। इसलिए, वे मानव मस्तिष्क के अनिवार्य संघटक हैं। यह सुस्थापित तथ्य है कि मनुष्यों के लिए भावनाओं के बिना जीना लगभग असंभव है।

1.1. भावनाओं की संरचना (Structure of Emotions)

हालांकि, इस तथ्य पर कोई मतैक्य नहीं है, लेकिन प्रायः यह माना जाता है कि जटिल प्रतिक्रियाओं के रूप में भावनाओं के तीन प्रमुख अवयव होते हैं। ये हैं:

- हमारे शरीर के भीतर दैहिक परिवर्तन (physiological changes within our bodies): जैसे- हृदय में परिवर्तन, रक्तचाप आदि।
- व्यक्तिनिष्ठ संज्ञानात्मक स्थितियाँ (subjective cognitive states): व्यक्तिगत अनुभव जिन्हें हम भावनाओं का उपनाम प्रदान करते हैं; और
- व्यक्त व्यवहार (expressive behaviour): इन आंतरिक प्रतिक्रियाओं के बाह्य संकेत।

1.2. भावनाओं के प्रकार (Types of Emotions)

प्रसन्नता, रुचि, संतोष, प्रेम तथा इनके सदृश कुछ भावनाएं जो सुखद और लाभप्रद होती हैं, उन्हें सकारात्मक भावनाएं कहा जाता है। वे नई संभावनाओं के द्वार खोलती हैं और हमारे व्यक्तिगत संसाधनों का सृजन करती हैं।

दूसरी ओर, नकारात्मक भावनाएं ऐसी कार्यवाहियों से संबद्ध होती हैं जिन्होंने हमारे पूर्वजों को अपना जीवन बचाने, जैसे कि बच निकलने, आक्रमण करने आदि में संभवतः सहयोग किया। नकारात्मक भावनाएं भी मूल्यवान और रचनात्मक हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, निरंतर कष्ट किसी व्यक्ति को सहायता मांगने, संबंध सुधारने या जीवन में नई दिशा खोजने के लिए प्रेरित कर सकता है।

यह एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि लोग सकारात्मक भावनाओं का आनन्द उठाते हैं जबकि नकारात्मक भावनाओं से विपत्ति के तौर पर व्यवहार करते हैं।

2. समझ/प्रज्ञता/बुद्धिमत्ता: अवधारणाएं, उपयोग और प्रकार

(Intelligence: Concepts, Utility, and Types)



2.1. समझ/प्रज्ञता/बुद्धिमत्ता की अवधारणा

(Concept of Intelligence)

“बुद्धिमत्ता का उपयुक्त संकेत ज्ञान नहीं अपितु कल्पना-शक्ति है” – अल्बर्ट आइंस्टीन।

“मुझे पता है कि मैं बुद्धिमान हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि मैं कुछ नहीं जानता हूँ” – सुकरात।

बुद्धिमत्ता को वस्तुतः तार्किक रूप से सोचने, अर्थपूर्ण ढंग से कार्यवाही करने और अपने परिवेश से प्रभावी ढंग से निपटने की एक व्यक्ति की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह एक ऐसा मानसिक गुण है जिसमें अनुभवों से सीखने, नवीन परिस्थितियों के प्रति अनुकूलित होने, भावात्मक (अमूर्त) अवधारणाओं को समझने व उनको संभालने तथा किसी के परिवेश का कुशलतापूर्वक प्रयोग करने के लिए ज्ञान का उपयोग करने की क्षमता समाहित होती है। इसकी व्याख्या प्रायः सूचना को अनुभव करने या उसका अनुमान लगाने और किसी परिवेश या संदर्भ में अनुकूल व्यवहार करने के लिए इसे ज्ञान के रूप में संधारित करने की क्षमता के रूप में की जा सकती है। यद्यपि, विभिन्न अनुसंधानकर्ताओं ने अपनी परिभाषाओं में बुद्धिमत्ता के विभिन्न पहलुओं पर जोर दिया है, तथापि उन सबने बुद्धिमत्ता के मौलिक आधार के रूप में कुछ प्रकार की संज्ञानात्मक ऊर्जा पर जोर दिया है। यह संज्ञानात्मक आधार ही व्यक्ति को उसकी क्षमताओं का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में समर्थ बनाता है। हालांकि, बाद के कुछ विचारकों ने तर्कसंगतता को बुद्धिमत्ता के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव मानने पर जोर देना छोड़ दिया।

2.2. बुद्धिमत्ता का उपयोग (Utility of Intelligence)

बुद्धिमत्ता का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग अपने परिवेश के प्रति अनुकूलन है। अधिकांशतः अनुकूलन अपने परिवेश के साथ अधिक प्रभावी ढंग से निपटने के लिए अपने आप को परिवर्तित करने की प्रक्रिया को समाविष्ट करता है, लेकिन इसका अर्थ परिवेश को परिवर्तित करना या पूर्णतया एक नवीन परिवेश की खोज करना भी हो सकता है। इस प्रकार के अनुकूलन विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं में हो सकते हैं: उदाहरण के लिए, स्कूल में छात्र अपने पाठ्यक्रम के अनुसार बेहतर प्रदर्शन करने के लिए वांछित विषय-वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं; अपरिचित लक्षणों वाले रोगी का उपचार करते समय चिकित्सक अंतर्निहित रोग के विषय में विचार करते हैं; या अधिकाधिक सुसंगत अभिव्यक्ति संप्रेषित करने के लिए कलाकार अपने चित्र पर पुनः कार्य करते हैं।

प्रभावी अनुकूलन में कई प्रकार की संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं समाविष्ट होती हैं, जैसे- ग्रहणबोध (perception), सीखना (learning), स्मृति (memory) तर्क करना एवं समस्या समाधान। इसलिए बुद्धिमत्ता की परिभाषा पर प्रमुख जोर इस तथ्य पर होता है कि वास्तव में यह कोई संज्ञानात्मक या मानसिक प्रक्रिया नहीं है अपितु इन प्रक्रियाओं का एक चयनात्मक संयोजन है जो प्रभावी अनुकूलन के प्रति सोद्देश्य दिशा निर्देशित होता है। इस प्रकार, नए रोग के विषय में ज्ञान प्राप्त करने वाला चिकित्सक चिकित्सा साहित्य में विद्यमान सामग्री का अध्ययन करके, कि इस सामग्री में रोग के विषय में कौन-कौनसे पहलुओं को ध्यान में रखना चाहिए, उस जानकारी का उपयोग रोगी की आवश्यकताओं के अनुसार करने हेतु तर्क का उपयोग कर, अनुकूलन करता है।

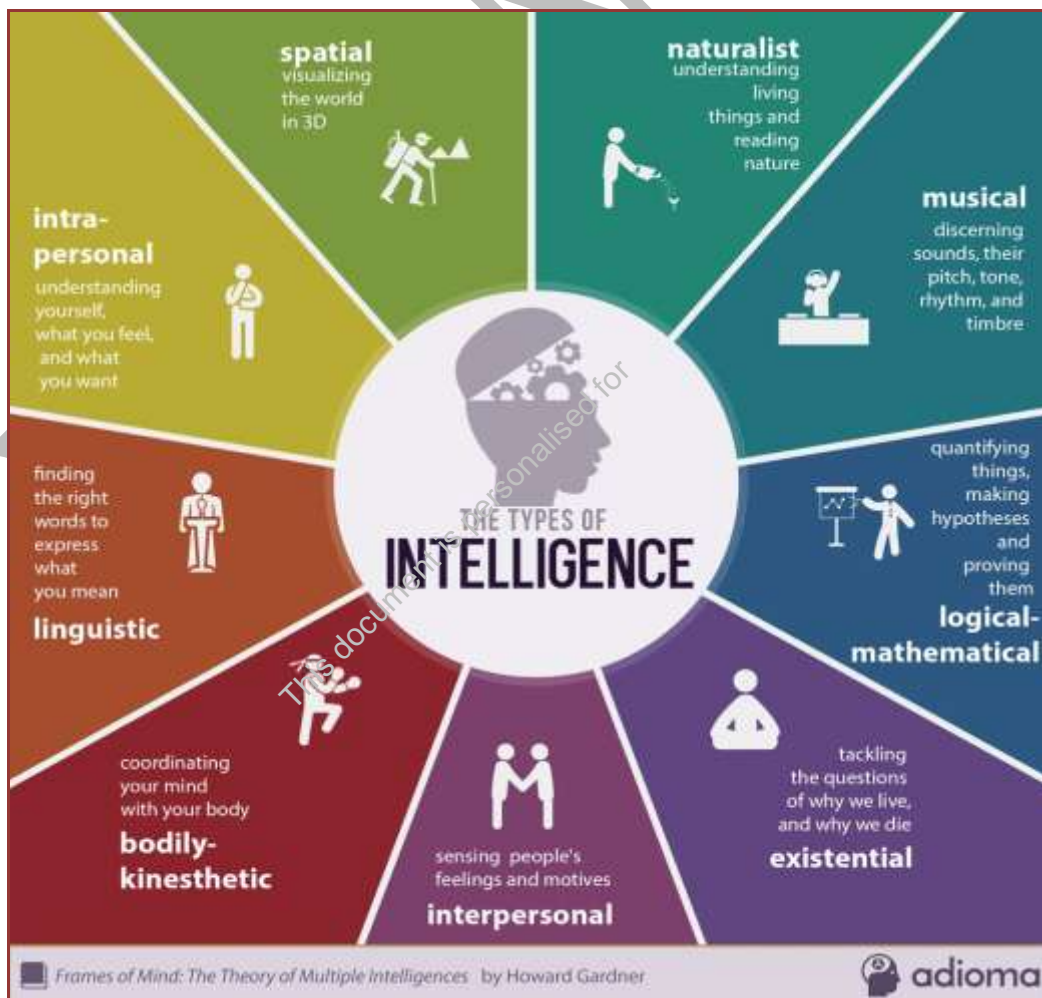
2.3. बुद्धिमत्ता के प्रकार (Types of Intelligence)

लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि परीक्षण (टेस्ट) के माध्यम से बुद्धिमत्ता का पता लगाया सकता है। ऐसा माना जाता था कि IQ टेस्ट के परिणामों के माध्यम से एक व्यक्ति की दूसरे से तुलना कर उनके बुद्धिमत्ता का परीक्षण किया जा सकता है। इस बात को भी अभिस्वीकृति प्राप्त थी कि बुद्धिमत्ता के



विभिन्न प्रकार होते हैं और ये सहसंबद्ध होते हैं- यदि लोग एक IQ टेस्ट के कुछ सेक्शन पर अच्छा प्रदर्शन करते हैं, तो वे उसके सभी सेक्शन पर अच्छा प्रदर्शन करने हेतु प्रवृत्त होंगे और इसके विपरीत स्थिति भी देखने को मिलती है, अतः, लोगों के लिए एक सामान्य बुद्धिमत्ता कारक विकसित किया जा सकता है। हालांकि, समय के साथ, कई लोगों ने IQ टेस्ट के परिणामों पर प्रश्न उठाने आरम्भ कर दिए। हाल ही में, शोधकर्ता बुद्धिमत्ता के विभिन्न क्षेत्रों को समझने का प्रयास करते रहे हैं। मस्तिष्क की कार्यप्रणाली के नए प्रकारों की खोज के माध्यम से, उन्होंने 'अतिरिक्त बुद्धिमत्ता कारकों', जैसे- अनुशासन, दृढ़ता, अंतर्वैयक्तिक संबंधों आदि पर विचार करना आरम्भ कर दिया।

इसने आगे विभिन्न प्रकार की बुद्धिमत्ता को प्रकाश में लाया। उन्होंने इस बात को स्वीकृति प्रदान किया कि हम में से प्रत्येक किसी एक प्रकार/समूह की ओर झुकाव रखता है लेकिन अनुशीलन (अभ्यास) के माध्यम से, हम शेष अन्य प्रकार की बुद्धिमत्ता विकसित कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में, मनोवैज्ञानिक **हावर्ड गार्डनर** ने बहु बुद्धिमत्ता सिद्धांत (Theory of Multiple Intelligences) की चर्चा की। यह सिद्धांत बुद्धिमत्ता के विभिन्न प्रकारों की विद्यमानता के विषय में चर्चा करता है, जो अनिवार्य रूप से सहसंबद्ध नहीं होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति में उनका छोटा अंश विद्यमान होता है। हालांकि, समय के साथ प्रत्येक व्यक्ति एक क्षेत्र को अधिक परिपूर्णता से विकसित कर लेता है तथा बाद में वह क्षेत्र दूसरे क्षेत्रों का स्थान ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार एक व्यक्ति विक्षेपणात्मक आधार पर अर्जित किये बिना भी भावनात्मक बुद्धिमत्ता धारित कर सकता है। मूलतः उन्होंने सात विभिन्न प्रकार की बुद्धिमत्ताएं प्रस्तावित की थीं लेकिन बाद में उन्होंने अपनी सूची में नैसर्गिक (naturalistic) और अस्तित्वपरक बुद्धिमत्ता (existential intelligence) को भी जोड़ा।



इनकी चर्चा नीचे की गयी है:

- **भाषायी बुद्धिमत्ता (Linguistic Intelligence):** वैसे लोग जिनमें भाषायी बुद्धिमत्ता विकसित होती है, वे मौखिक और लिखित दोनों रूपों में स्वयं को व्यक्त करने की बेहतर क्षमता प्रदर्शित करते हैं।
- **तार्किक बुद्धिमत्ता (Logic Intelligence):** प्रबल तार्किक बुद्धिमत्ता वाले लोग अत्यंत सरलता से गणित तथा तर्क-शास्त्र के प्रश्न हल कर सकते हैं।
- **प्रायोगिक बुद्धिमत्ता (Kinesthetic Intelligence):** प्रायोगिक बुद्धिमत्ता का संबंध शारीरिक अभिव्यक्ति से होता है। ऐसे लोगों को स्थान, दूरी, गहराई तथा आकार की बहुत अच्छी समझ होती है। शरीर पर अपेक्षाकृत अधिक नियंत्रण होने के कारण ऐसा व्यक्ति सटीकता तथा सरलता से जटिल गतिविधियों को संचालित कर सकता है।
- **त्रिविमीय बुद्धिमत्ता (Spatial Intelligence):** जिनकी त्रिविमीय बुद्धिमत्ता अधिक होती है वे 2D और 3D चित्र बनाने तथा उनकी कल्पना करने में सक्षम होते हैं। गेमिंग, वास्तुकला, मल्टी-मीडिया तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी क्षेत्र के पेशेवर लोग उच्च स्तर की त्रिविमीय बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करते हैं।
- **संगीतात्मक बुद्धिमत्ता (Musical Intelligence):** संगीतात्मक बुद्धिमत्ता एक दुर्लभ किस्म की बुद्धिमत्ता है। ऐसी क्षमता वाले लोग ध्वनि तथा संगीत को सुन कर विभिन्न स्वरूपों तथा सुरों को पहचान लेते हैं।
- **अंतर्वैयक्तिक बुद्धिमत्ता (Interpersonal Intelligence):** अंतर्वैयक्तिक बुद्धिमत्ता वाले लोग व्यावहारिक होते हैं तथा दूसरों के प्रति ज़िम्मेदारी की गहरी भावना प्रदर्शित करते हैं। वे शांत-चित्त होते हैं, उन्हें सुनने तथा बोलने दोनों की कला आती है, किन्तु उन सबसे अधिक उनमें अपने ज्ञान का प्रयोग कर पाने तथा दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता होती है। जिन्हें जन्मजात नेता समझा जाता है, वे वही लोग होते हैं जिनमें अंतर्वैयक्तिक बुद्धिमत्ता होती है। अंतर्वैयक्तिक बुद्धिमत्ता वाले लोग दूसरों में छिपे गुणों को पहचान कर उसे सतह पर लाने की कला भी जानते हैं।
- **अंतःवैयक्तिक बुद्धिमत्ता (Intrapersonal Intelligence):** अंतःवैयक्तिक बुद्धिमत्ता उन लोगों का लक्षण है जो स्वयं से अत्यंत गहराई जुड़े होते हैं। ऐसे लोग सामान्यतः स्वयं में सिमटे होते हैं किन्तु अपने समकक्षों में उनका बड़ा मान होता है। बुद्धिमत्ता के सात प्रकारों में से प्रत्येक में, अंतःवैयक्तिक बुद्धिमत्ता सबसे दुर्लभ होती है।

इस प्रकार, बुद्धिमत्ता की तार्किक गणितीय अवधारणा वाले एकात्म बुद्धिमत्ता संबंधी पूर्ववर्ती अवधारणा ने बहु बुद्धिमत्ता के सिद्धांत का मार्ग प्रशस्त किया। अंतर्वैयक्तिक तथा अंतःवैयक्तिक बुद्धिमत्ता संबंधी गार्डनर की अवधारणा बुद्धिमत्ता को समझने तथा उस पर आधारित साहित्य की व्याख्या करने में बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई। इन्हीं से सामाजिक बुद्धिमत्ता तथा अंततः भावनात्मक बुद्धिमत्ता की धारणा सामने आयी।

बाद में, टफ्ट विश्वविद्यालय के रॉबर्ट स्टेनबर्ग ने बुद्धिमत्ता संबंधी अपनी ट्राईआर्किक सिद्धांत (Triarchic Theory) को सामने रखा जिसमें यह तर्क प्रस्तुत किया गया कि बुद्धिमत्ता संबंधी पूर्ववर्ती परिभाषाएं अति संकीर्ण हैं क्योंकि वे उन बुद्धिमत्ताओं पर आश्रित हैं जिन्हें IQ टेस्ट द्वारा परखा जा सकता है। इसके स्थान पर, स्टेनबर्ग का मानना है कि बुद्धिमत्ता के प्रकारों को **तीन उपवर्गों: विश्लेषणात्मक (analytic), रचनात्मक (creative) तथा व्यवहारिक (practical)** में विभाजित किया जा सकता है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि बुद्धिमत्ता संबंधी परीक्षणों में रचनात्मकता को उपेक्षित किया जाना गलत था तथा अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं यथा संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं, निष्पादन संबंधी अवयव, नियोजन तथा निर्णय-प्रक्रिया संबंधी कौशल इत्यादि भी हैं।

बुद्धिमत्ता के ट्राईआर्किक सिद्धांत के विभिन्न पहलुओं के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं:

- (i) **अवयवभूत – विश्लेषणात्मक बुद्धिमत्ता (Componential – Analytical Intelligence):** विश्लेषणात्मक बुद्धिमत्ता को किताबी बुद्धिमत्ता के तौर पर संदर्भित किया जाता है। बुद्धिमत्ता का यह





प्रकार IQ की पारंपरिक परिभाषा तथा अकादमिक उपलब्धियों से अधिक संबंधित है। इसे अवयवभूत बुद्धिमत्ता भी कहा जाता है। विश्लेषणात्मक प्रकृति के कारण उच्च विश्लेषणात्मक बुद्धिमत्ता वाला व्यक्ति समस्याओं का हल ढूँढने में प्रखर होता है। गूढ़ सोच तथा मूल्यांकन संबंधी कौशल के कारण इन लोगों को समस्याओं के वे समाधान भी दिख जाते हैं जो सामान्यतः समझ में नहीं आते।

(ii) अनुभवजन्य – रचनात्मक बुद्धिमत्ता (Experiential – Creative Intelligence): नई परिस्थितियों से सामना होने पर नए विचारों तथा समाधानों के आविष्कार की क्षमता को रचनात्मक बुद्धिमत्ता कहते हैं। इसे अनुभवजन्य बुद्धिमत्ता भी कहा जाता है। बुद्धिमत्ता के इस प्रकार का संबंध नवीन समस्याओं तथा स्थितियों से निपटने के लिए वर्तमान ज्ञान के उपयोग से है।

(iii) व्यवहारिक – प्रासंगिक बुद्धिमत्ता (Practical – Contextual Intelligence): सरल शब्दों में, व्यवहारिक बुद्धिमत्ता की परिभाषा अपना बचाव करने में सक्षम होना है। किसी परिस्थिति से तादात्म्य स्थापित करने की किसी व्यक्ति की क्षमता या अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप उसे परिवर्तित कर लेने की योग्यता को व्यावहारिक बुद्धिमत्ता कहा जाता है। इस प्रकार की बुद्धिमत्ता को समझ पाने का एक अन्य तरीका उसे सामान्य बोध के रूप में देखना है। प्रतिदिन की परिस्थितियों को सर्वोत्तम संभव तरीके से सुलझाना व्यक्ति की बुद्धिमत्ता को प्रदर्शित करता है।

3. बुद्धिमत्ता का सामाजिक पहलू

(The Social Aspect of Intelligence)

3.1. परिभाषा (Definition)

दूसरों के साथ भली-भाँति घुल-मिल जाने तथा उनका सहयोग पाने की क्षमता सामाजिक बुद्धिमत्ता कहलाती है। कभी-कभी इसे सरल भाषा में “लोक-व्यवहार कौशल” (people skills) कहा जाता है। सामाजिक बुद्धिमत्ता की आरंभिक परिभाषा 1920 में एडवर्ड थोर्नडाइक द्वारा दी गयी, उन्होंने इसे “मानवीय संबंधों में बुद्धिमानी पूर्वक व्यवहार करने हेतु पुरुषों, महिलाओं तथा बालिकाओं को समझने व प्रबंधित करने की क्षमता” के रूप में बताया।

सामाजिक बुद्धिमत्ता वस्तुतः एक व्यक्ति द्वारा अपने परिवेश को पूर्णरूपेण समझने तथा सामाजिक रूप से सफल आचरण हेतु उपयुक्त प्रतिक्रिया देने की क्षमता है। इस प्रकार, सामाजिक बुद्धिमत्ता का आशय परिस्थिति के प्रति जागरूक रहने से है। यह ऐसा सामाजिक अनुप्रेरक है जो इन परिस्थितियों को नियंत्रित करती है। पुनः यह ऐसी संवाद शैली तथा रणनीतियों से संबंधित है जो एक व्यक्ति को दूसरों के साथ व्यवहार करते वक़्त उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता कर सके। इसमें किंचित आत्म-ज्ञान तथा अपनी मान्यताओं एवं प्रतिक्रिया के तरीके भी छिपे होते हैं। इस प्रकार, सामाजिक बुद्धिमत्ता का आशय लोगों के साथ संपर्क स्थापित कर पाने तथा उन्हें सफल रूप से प्रभावित करने की क्षमता से है।

यह अंतर्व्यक्तिक बुद्धिमत्ता (interpersonal intelligence) के समतुल्य है। यह होवार्ड गार्डनर के बहु बुद्धिमत्ता सिद्धांतों (Theory of Multiple Intelligences) में पायी गयी बुद्धिमत्ता के प्रकारों में से एक है। कुछ लेखकों ने सामाजिक बुद्धिमत्ता की परिभाषा को सामाजिक स्थितियों से निपटने के ज्ञान तक सीमित रखा है। कदाचित् इसे अधिक उपयुक्त रूप से सामाजिक संज्ञान या सामाजिक विपणन संबंधी बुद्धिमत्ता कहा जाता है, क्योंकि इसका संबंध प्रचलनयुक्त सामाजिक मनोवैज्ञानिक विज्ञापन तथा विपणन संबंधी रणनीतियों एवं उपायों से है।

3.2. सामाजिक बुद्धिमत्ता का विकास

(Developing Social Intelligence)

चूँकि सामाजिक बुद्धिमत्ता सीखे गए व्यवहार के माध्यम से अभिव्यक्त होने वाला कौशलों का एक सेट या समुच्चय है, इसलिए इसे दूसरों पर स्वयं के व्यवहार के प्रभाव का मूल्यांकन कर विकसित किया जा सकता है। इसे उस सीमा तक मापा जा सकता है जिस तक हम दूसरों से व्यवहार करने में सफल हो पाते हैं। व्यक्ति व्यवहार के नवीन तरीकों तथा नवीन संवाद नीतियों के साथ प्रयोग कर सकता है।



सरलतम शब्दों में कहा जाए तो, यह लोगों के साथ “घुलने-मिलने” की क्षमता को प्रदर्शित करता है, जिसे ऐसे समझ सकते हैं – व्यक्ति की आयु जैसे-जैसे बढ़ती है, वह नवीन चीजें सीखता है, परिपक्व होते जाता है तथा दूसरों के साथ कैसे व्यवहार करना है, इस संबंध में अनुभव प्राप्त करता है। जिन लोगों में सामाजिक बुद्धिमत्ता का भली प्रकार से समावेश हम देख/समझ पाते हैं, उनके कुछ उदाहरणों में महात्मा गांधी, दलाई लामा तथा नेल्सन मंडेला जैसे लोग शामिल हैं।

दुर्भाग्य से, बहुत से लोगों में उम्र बढ़ने पर भी सीखने तथा विकसित होने की प्रवृत्ति नहीं होती। बहुत से लोग सामाजिक, व्यावसायिक तथा पेशेवर स्थितियों में सफल हो सकने के लिए कौशल ग्रहण करने तथा जागरूक होने की चेष्टा कभी नहीं करते। जबकि यह पूर्णतया स्पष्ट है कि दूसरों के साथ व्यवहार-कुशलता में कमी वाले वयस्क आधारभूत अवधारणाओं को समझ पाने तथा अंतर्वैयक्तिक प्रभाविता की कसौटी पर स्वयं को जांचने की प्रक्रिया अपना कर अपनी सामाजिक बुद्धिमत्ता की स्थिति में बहुत हद तक सुधार ला सकते हैं।

3.3. सामाजिक बुद्धिमत्ता से भावनात्मक बुद्धिमत्ता की ओर

(From Social Intelligence towards Emotional Intelligence)

यद्यपि, कुछ विद्वानों ने “लोक-व्यवहार कौशल” (people skills) या “सामाजिक बुद्धिमत्ता” को भावनात्मक बुद्धिमत्ता के सिद्धांत के अंतर्गत सम्मिलित किया है, परन्तु व्यावहारिक रूप से कार्यनिर्वाह-क्षमता (competence) के दो विभिन्न आयामों के रूप में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक बुद्धिमत्ता पर विचार करना अधिक महत्वपूर्ण है। सामाजिक बुद्धिमत्ता {गार्डनर की “अंतर्वैयक्तिक बुद्धिमत्ता” (interpersonal intelligence)} वस्तुतः भावनात्मक बुद्धिमत्ता {गार्डनर की अंतःवैयक्तिक बुद्धिमत्ता (intrapersonal intelligence)} से पृथक्, परन्तु उसकी पूरक है। लेकिन हमें स्वयं को समझने और दूसरों से संवाद करने के तरीकों के लिए दोनों ही मॉडलों की आवश्यकता होती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के अपर्याप्त रूप से विकसित होने के कारण सामाजिक बुद्धिमत्ता में कुछ कमियां आ जाती हैं। इसके विपरीत सामाजिक बुद्धिमत्ता की कुछ कमियां असफल सामाजिक अनुभवों का कारण बन सकती हैं, जो किसी व्यक्ति के स्व-महत्व की भावना (जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता का ही एक भाग है) को क्षीण कर सकती हैं।

The Emotional and Social Intelligence Model



4. भावनाओं और बुद्धिमत्ता के मध्य संबंध: पारंपरिक परिप्रेक्ष्य



(Relation Between Emotions and Intelligence: The Traditional Perspective)

तार्किक या गणितीय क्षमता के रूप में बुद्धिमत्ता की पारम्परिक धारणा इसे संज्ञानात्मक क्षमता (cognitive ability) के अधीन ला देती है। संज्ञान (Cognition) वस्तुतः स्मृति, मनोयोग, भाषा, समस्या निवारण और नियोजन जैसी प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है। कई संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में प्रायः तथाकथित नियंत्रित प्रक्रियाएं सम्मिलित होती हैं, जैसे- जब लक्ष्य का पीछा करना हो तो मस्तिष्क को व्यवधान (उदाहरण के लिए: विचलित करने वाली उत्तेजना, जैसे घबराहट वाली आवाज) से संरक्षित रखना चाहिए (उदाहरण के लिए: कुछ तथ्यों को याद रखने जैसी जानकारी मस्तिष्क में बनाये रखना)।

परम्परागत रूप से यह माना जाता था कि गैर-संज्ञानात्मक होने के कारण भावनाएं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को सुकर नहीं बना सकती। वास्तव में, यह माना जाता था कि भावनाएं संज्ञानात्मक कार्य के प्रतिकूल होती हैं, क्योंकि वे गहन अनुभूति होती हैं। इस प्रकार, आरंभ में धारणा यह थी कि भावना और बुद्धिमत्ता के मध्य या तो कोई सम्बन्ध नहीं है या नकारात्मक सम्बन्ध है। उदाहरण के लिए, जब हम क्रोध या अवसाद जैसी नकारात्मक भावना अनुभव कर रहे होते हैं, तो पहली हल करने या अच्छे निर्णय करने जैसे रचनात्मक कार्यों को करना बहुत कठिन हो जाता है।

हालाँकि, मेयर और सालोवी ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा में भावनाओं और बुद्धिमत्ता के बीच नकारात्मक सम्बन्ध को अस्वीकार कर दिया। यह अनुभव किया गया कि हमारी सोच या निर्णय लेने में भावनाएं मार्गवरोध नहीं हैं। यह हमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विषय की ओर ले जाती है।

5. भावनात्मक (संवेगात्मक) बुद्धि/समझ/बुद्धिमत्ता: भावनाओं और बुद्धिमत्ता का समेकन

(Emotional Intelligence: Integration of Emotions and Intelligence)

1990 में मेयर और सालोवी ने पहली बार भावनात्मक बुद्धिमत्ता पद को प्रस्तुत किया गया था। इसे कौशल के एक ऐसे सेट के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें व्यक्ति की स्वयं की और दूसरों की अनुभूति/भावनाओं का निरीक्षण/अन्वेषण सम्मिलित होता है, ताकि उनमें भेद किया जा सके और उस जानकारी का उपयोग व्यक्ति की सोच और उसके कार्यवाही में मार्गदर्शन के लिए किया जा सके। इस प्रकार यह भावनाओं और बुद्धि/बुद्धिमत्ता का समेकन करता है। सरल भाषा में हम यह कह सकते हैं कि यह भावनाओं को रचनात्मक उद्देश्यों के लिए प्रयोग करने की क्षमता है। हमें यह समझ लेना चाहिए कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता, बुद्धिमत्ता के विपरीत नहीं है। यह हृदय पर मस्तिष्क की विजय नहीं है बल्कि यह दोनों का एक अनूठा मिलन है।

मेयर और सालोवी ने इस अवधारणा को बुद्धिमत्ता की उस परम्परागत धारणा की चुनौती के रूप में प्रस्तुत किया था, जो केवल संज्ञानात्मक क्षमता पर ही केन्द्रित थी। इन्होंने उन विचारकों को भी चुनौती दिया, जो भावनाओं को संज्ञानात्मक गतिविधियों के लिए बाधा मानते थे। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में अंतःव्यैक्तिक और अंतर्व्यैक्तिक बुद्धिमत्ता, अर्थात् वर्तमान भावनात्मक स्थिति में अपनी और दूसरों की क्षमताओं के सन्दर्भ में जानने की क्षमता सम्मिलित है।